Unit 3: उत्पादक व्यवहार और पूर्ति (Part 2)

लागत की अवधारणा (Cost)

उत्पादन लागत का अर्थ

उत्पादन के साधनों का प्रयोग करने के लिए जो धनराशि व्यय करनी पड़ती है उसे उत्पादन लागत कहते हैं।

लागत फलन (Cost Function)

उत्पादन की मात्रा (Output) एवं *उत्पादन लागत (Cost)* के बीच फलनात्मक संबंध को लागत फलन कहते हैं।

उत्पादन लागत उत्पादन की मात्रा का फलन है।

$$C = f(O)$$

C – लागत O – उत्पादन की मात्रा

लागत का वर्गीकरण (Classification of Cost)

लागत को तीन प्रमुख वर्गों में बांटा गया है:

1. मौद्रिक लागत (Money Cost)
2. वास्तविक लागत (Real Cost)
3. अवसर लागत (Opportunity Cost)

मौद्रिक लागत (Money Cost)

किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किए गए कुल मुद्रा व्यय को मौद्रिक लागत कहते हैं।

उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाए तो उत्पादक इन सात उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करता है मौद्रिक लागत कहते हैं।

जैसे:

कच्चे माल पर व्यय, श्रमिकों की मजदूरी एवं वेतन, ब्याज भुगतान, किराया, मरम्मत व्यय, प्रबंधन व्यय, विज्ञापन व्यय, यातायात व्यय आदि।

मौद्रिक लागतों के प्रकार (Types of Money Cost)

मौद्रिक लागत में तीन प्रकार की होती है

1. स्पष्ट लागते (Explicit Costs)
2. अस्पष्ट लागत (Implicit Costs)
3. सामान्य लाभ (Normal profit)

कुल मौद्रिक लागत = स्पष्ट लागत + अस्पष्ट लागत + सामान्य लाभ

स्पष्ट लागते (Explicit Cost)

ऐसे सभी व्यय हैं जिनका भुगतान उत्पादक द्वारा उत्पादन क्रिया के दौरान दूसरों को करना होता है, स्पष्ट लागते कहते हैं।

लेफ्टविच के अनुसार, "स्पष्ट लागते वे नकद भुगतान है जो फर्मों द्वारा बाहरी व्यक्तियों को उनकी सेवाओं तथा वस्तुओं के लिए किए जाते हैं"।

जैसे:

= कच्चे माल पर व्यय, श्रमिकों की मजदूरी, उधार ली गई पूंजी पर व्यय, भूमि का किराया,

विज्ञापन व्यय आदि।

अस्पष्ट या सन्निहित लागते (Implicit Cost)

इनमें उत्पादक के व्यय सम्मिलित होते हैं जिनका उत्पादक को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करना होता है।

इनमें उन सेवाओं एवं साधनों की कीमतों को सम्मानित किया जाता है जिनका उत्पादन प्रयोग तो करता है किंतु प्रत्यक्ष रूप से उसकी कीमत नहीं चुकाता। ऐसे साधनों एवं सेवाओं की लागतों को सन्निहित लागतों के रूप में जाना जाता है।

जैसे: एक उद्यमी की स्वयं की सेवा, एक किसान द्वारा स्वयं के खेत में की गई मजदूरी

सामान्य लाभ (Normal Profit)

उत्पादकों उत्पादन में बनाए रखने के लिए जिस न्यूनतम लाभ की आवश्यकता होती है, वह न्यूनतम लाभ सामान्य लाभ कहलाता है।

यह न्यूनतम लाभ राशि यदि उत्पादक को प्राप्त नहीं होती, तब वह उत्पादन कार्य बंद कर देगा और स्वयं भी एक वेतनभोगी बनने का प्रयास करेगा।

वास्तविक लागत (Real Cost)

वास्तविक लागत की धारणा का प्रतिपादन **प्रो. मार्शल** ने किया था।

किसी उत्पादन प्रक्रिया के अंतर्गत होने वाले कष्ट एवं त्याग वास्तविक लागत उत्पन्न करते हैं। वास्तविक लागतों को ***सामाजिक लागत*** भी कहा जाता है क्योंकि समाज को वस्तुओं के उत्पादन में कष्ट का सामना करना पड़ता है।

मार्शल के शब्दों में, "किसी वस्तु के उत्पादन में विभिन्न प्रकार के श्रमिकों को जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रत्न करने पड़ते हैं अथवा साथ ही वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली पूंजी को संचित करने में संयम अथवा प्रतीक्षा करनी पड़ती है, में सब प्रयत्न अथवा त्याग मिलकर वस्तु की वास्तविक लागत कहलाते हैं"।

अवसर लागत (Opportunity Cost)

अवसर लागत की अवधारणा का विकास वास्तविक लागत के विचार में संशोधन करके हुई।

प्रो. बेनहम के शब्दों में, "किसी भी वस्तु की अवसर लागत वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प है, जिसका उत्पादन उन्हीं उत्पत्ति साधनों के द्वारा उसी लागत पर उस वस्तु के विकल्प के रूप में किया जा सकता है"।

लागत की अवधारणायें (Concepts of Cost)

उत्पादन लागतों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है:

अल्पकाल में उत्पादन लागत

अल्पकाल में उत्पादन लागतें दो प्रकार की होती है- **स्थिर लागतें एवं परिवर्तनशील लागते**

दीर्घकाल में उत्पादन लागत

दीर्घकाल में कोई साधन स्थिर नहीं होता केवल परिवर्तनशील लागते होती है।

अल्पकाल में उत्पादन लागतों की अवधारणायें

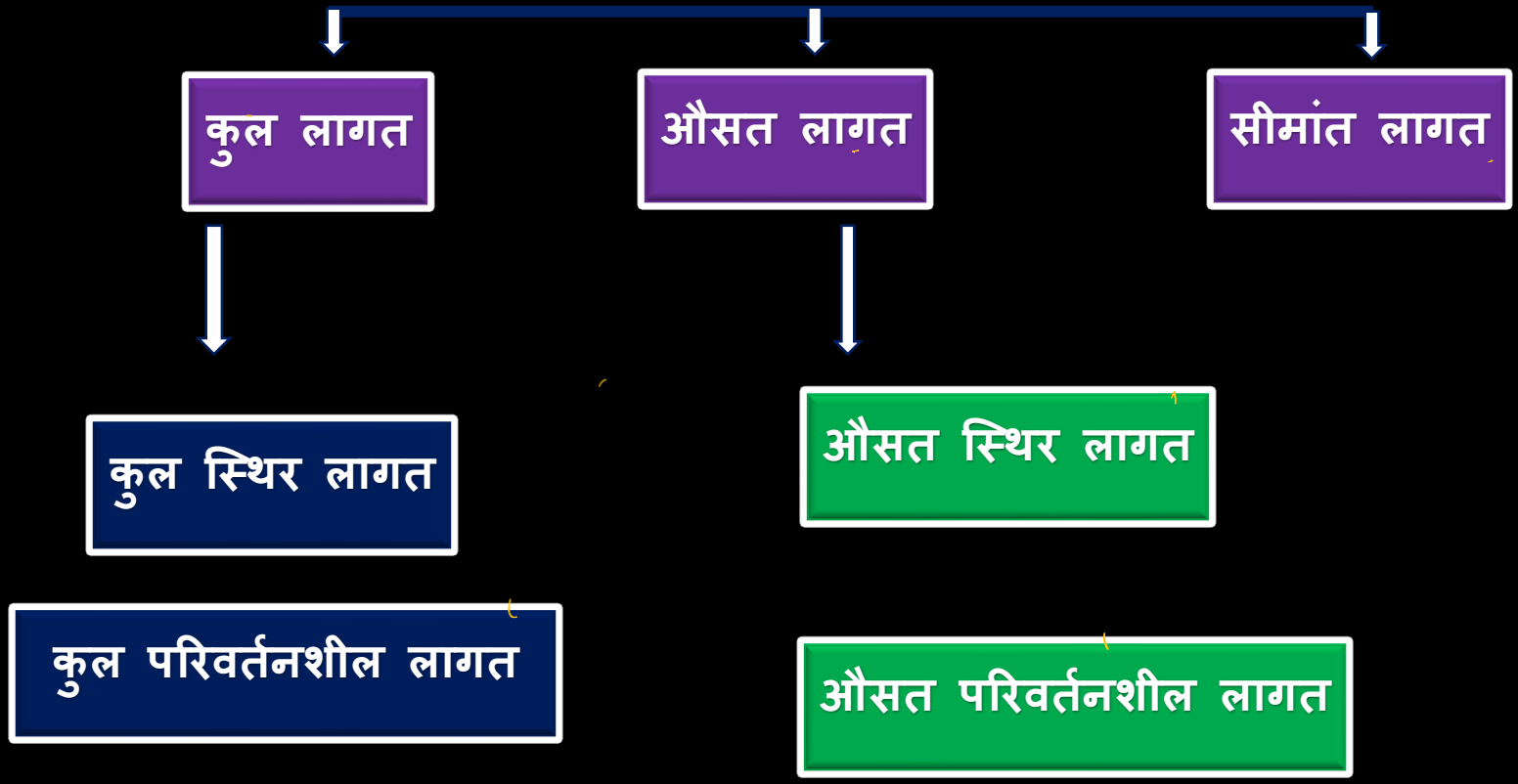

कुल स्थिर लागत (Total Fixed Cost) - TFC

स्थिर लागत उस कुल खर्च का जोड़ है जो उत्पादक उत्पादन के स्थिर साधनों की सेवाओं को खरीदने या भाड़े पर लेने के लिए खर्च करनी पड़ती है।

स्थिर लागत उत्पादन के आकार से अप्रभावित रहती है। उत्पादन स्तर शून्य होने पर भी उत्पाद को स्थिर लागतों का भुगतान करना पड़ता है।

TFC = TC - TVC

चित्र:

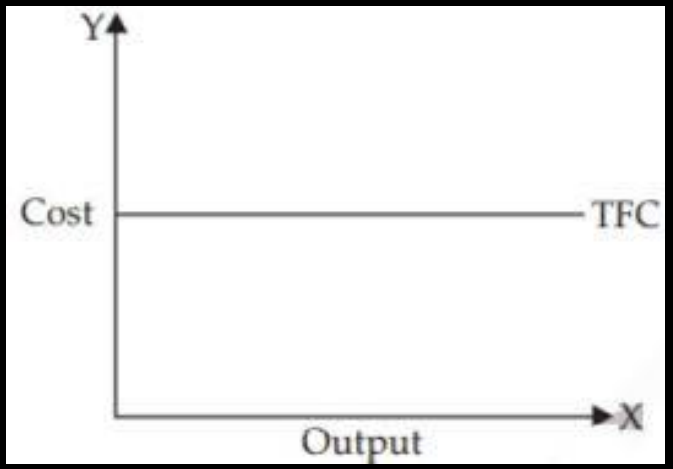

कुल परिवर्तनशील लागत (Total Variable Cost) - TVC

परिवर्तनशील लागत वह लागत है जो उत्पादन को उत्पादन के घटते बढ़ते साधनों के प्रयोग के लिए खर्च करनी पड़ती है।

परिवर्तनशील लागत का आकार उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करता है। अर्थात जैसे जैसे उत्पादन में वृद्धि होती है, परिवर्तनशील लागतों में भी वृद्धि होती जाती है।

TVC = TC – TFC

चित्र

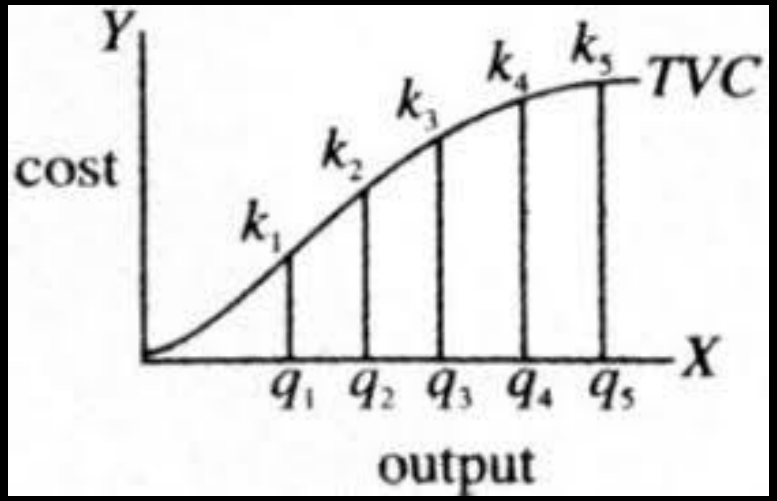

कुल लागत (Total Cost – TC)

किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लिए उत्पादक को जितनी कुल व्यय करने पड़ते हैं, उनके जोड़ को कुल लागत कहते हैं।

कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्तनशील लागत के योग को कुल लागत कहा जाता है।

TC = TFC + TVC

चित्र

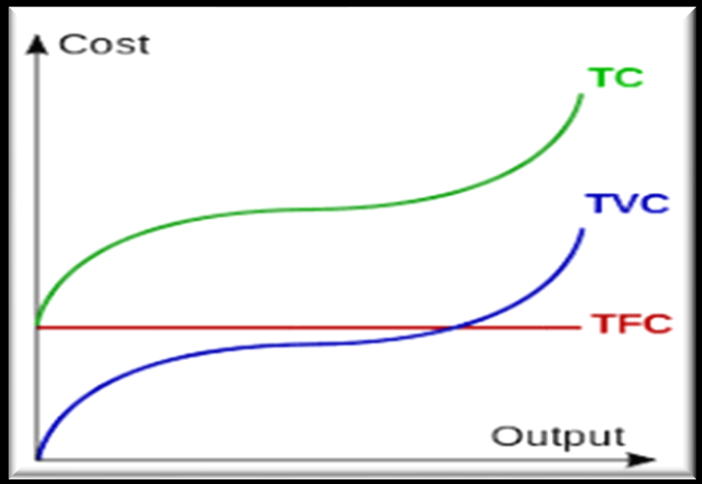

अल्पकालीन औसत लागतें

औसत लागत (Average Cost – AC)

किसी वस्तु की प्रति इकाई लागत को औसत लागत कहा जाता है।

कुल लागत (TC) को उत्पादन मात्रा (Q) से भाग देकर प्राप्त भागफल को औसत लागत (AC) कहते **हैं।**

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

अल्पकाल में औसत लागत (AC) औसत स्थिर लागत (AFC) तथा औसत परिवर्तनशील लागत (AVC) का योग होती है।

AC= AFC+ AVC

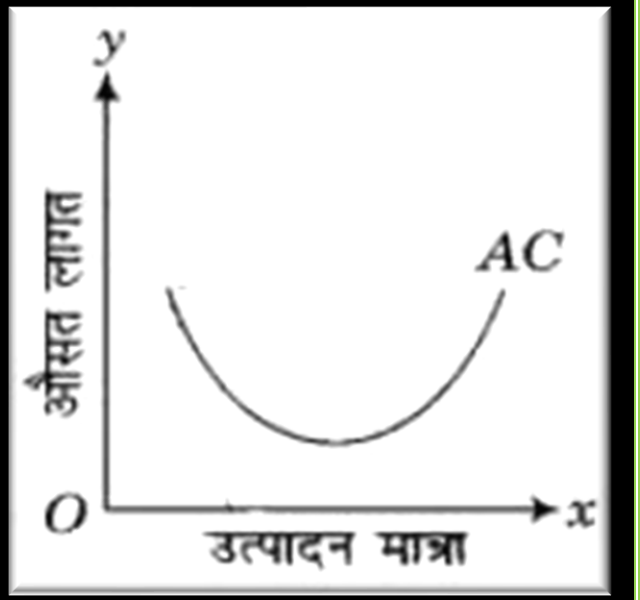

औसत स्थिर लागत (Average Fixed Cost – AFC)

यदि उत्पादन की कुल स्थिर लागत (TFC) को उत्पादन की मात्रा (Q) से भाग दे दें तो हमें औसत स्थिर लागत (AFC) की प्राप्ति होती है।

$$\textbf{AFC} = \frac{TFC}{Q}$$

औसत स्थिर लागत उत्पादन के बढ़ने पर घटती है क्योंकि कुल स्थिर लागत (TFC) स्थिर रहती है। जिसके कारण उत्पादन की मात्रा में बढ़ने से औसत स्थिर लागत (AFC) घटती चली जाती है।

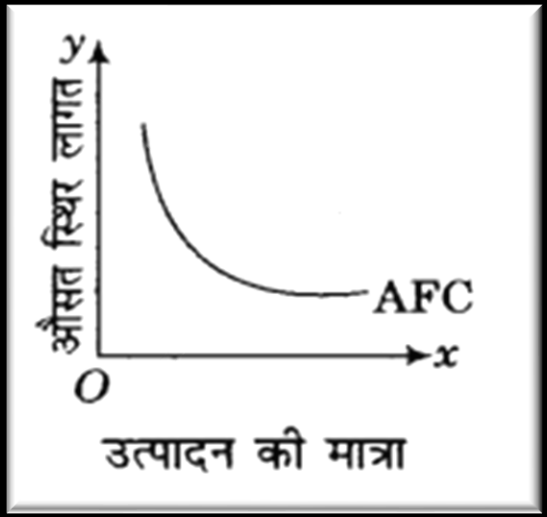

औसत परिवर्तनशील लागत (Average Variable Cost – AVC)

औसत परिवर्तनशील लागत, कुल परिवर्तनशील लागत एवं उत्पादन की मात्रा का भागफल होती है।

$$AVC = \frac{TVC}{Q}$$

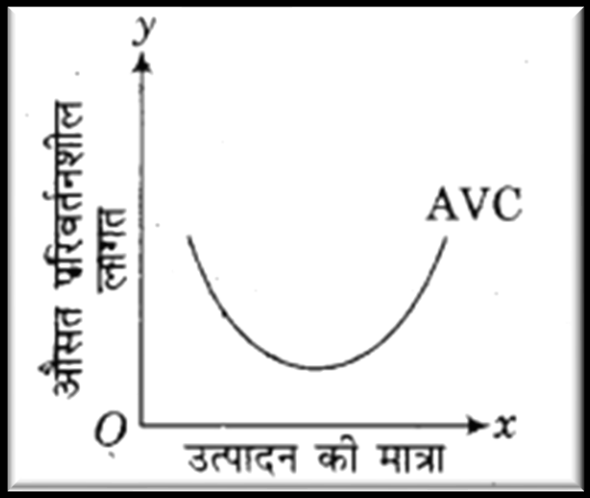

सीमांत लागत (Marginal Cost – MC)

सीमांत का अभिप्राय है - **एक अतिरिक्त**।

एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने से कुल लागत में जितनी वृद्धि होती है, उसे उस इकाई विशेष की सीमांत लागत कहते हैं।

सीमांत लागत केवल परिवर्तनशील लागतों पर निर्भर करती है, स्थिर लागतों पर नहीं।

$$MC_n = TC_n - TC_{n-1}$$

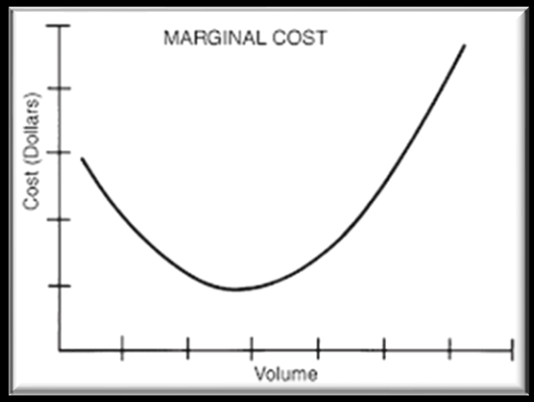

औसत लागत (AC) एवं सीमांत लागत (MC) में संबंध

- औसत लागत (AC) एवं सीमांत लागत (MC) दोनों की गणना कुल लागत (TC) द्वारा की जाती है।

$$AC = \frac{TC}{Q}$$

$$MC = \frac{\Delta TC}{\Delta Q}$$

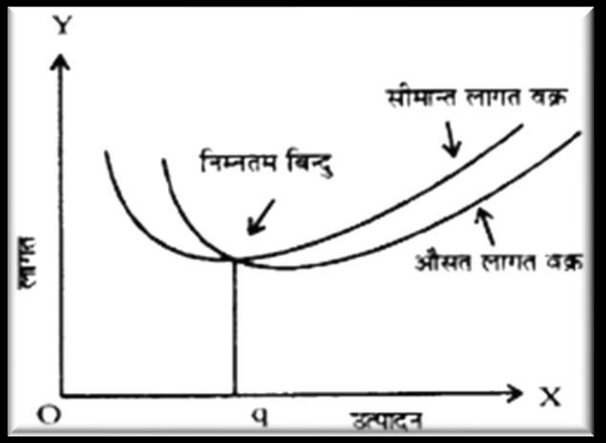

- जब औसत लागत वक्र गिरता है, तब सीमांत लागत वक्र एक सीमा तक गिरता है, किंतु एक अवस्था के बाद सीमांत लागत बढ़ना आरंभ हो जाता है। (MC < AC)
- जब औसत लागत न्यूनतम होती है, तब सीमांत लागत वक्र औसत वक्र को नीचे से काटता है। अर्थात न्यूनतम औसत लागत सीमांत लागत के बराबर होती है। (MC = AC)

- जब औसत लागत बढ़ता है तो सीमांत लागत वक्र औसत लागत से ऊपर होते है एवं साथ ही साथ औसत लागत से तीव्र गति से बढ़ता है। (MC > AC)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com